जनगणना 2001 की अस्थाई रिपोर्ट

डॉ. नरेश पुरोहित

भारत की जनगणना यानी दुनिया की सबसे बड़ी प्रशासनिक कार्यवाही 9 से 28 फरवरी, 2001 तक चली। इसके बाद 1 से 5 मार्च के बीच फिर जनगणना का एक दौर हुआ। 26 मार्च को भारत के महापंजीयक और जनगणना आयुक्त ने इसकी अस्थाई रिपोर्ट जारी कर दी।

यह रिपोर्ट कई सुखद सूचनाएं लाई है। जैसे देश में पढ़े-लिखे लोगों की संख्या पिछले दस सालों में 52.21 फीसदी से बढ़कर 65.38 फीसदी हो गई है; पुरुषों के मुकाबले महिलाओं की कुल संख्या बढ़ी है आदि। यह रिपोर्ट कई मायनों में देश में सामाजिक सुधार के संकेत देती है। जनसंख्या बढ़कर एक अरब की सीमा ज़रूर पार कर गई है लेकिन शिक्षा व स्वास्थ्य के स्तर में भी सुधार हो रहा है और गरीबी रेखा के नीचे जीवन बसर करने वाले लोगों की संख्या कम हो रही है। (यह बात दीगर है कि गरीबी रेखा अपने आप में राजनीति प्रेरित एक परिवर्तनीय रेखा है)।

आबादी और वृद्धि दर

इस रिपोर्ट के अनुसार पहली मार्च की आधी रात को भारत की आबादी 1,02,70,15,247 थी। इसमें पुरुषों की संख्या 53,12,27,078 और महिलाएं 49,57,38,169 थीं। जनगणना रिपोर्ट के आंकड़े बताते हैं कि दुनिया की आबादी में भारत का हिस्सा अब 16.7 फीसदी हो गया है। 1981-91 के दौरान भारत की जनसंख्या वृद्धि दर 23.86 प्रतिशत थी जो पिछले दशक (1991-2001) में 2.52 फीसदी गिरकर 21.34 प्रतिशत हो गई। आज़ादी के बाद जनसंख्या वृद्धि दर में आई यह सबसे भारी कमी है। राज्यों के हिसाब से देखें तो केरल में जनसंख्या वृद्धि की दर सबसे कम 9.42 प्रतिशत रही। इसके बाद तमिलनाडु और आंध्रप्रदेश का नम्बर आता है। इन दोनों राज्यों की जनसंख्या वृद्धि दर क्रमशः 11.19 और 13.86 फीसदी है, जो पहले ही काफी कम है।